Prof. Vishal
V.S.J College

Physical vs Human geography
(भौतिक बनाम मानव भूगोल)

प्रारम्भिक काल में भूमि के सिर्फ औद्योगिक भौतिक तत्वों का अध्ययन भूगोल में होता था। अतः भूगोल का विषय-क्षेत्र संकुचित था। इसे व्यापक बनाने का श्रेय भौतिक बनाम मानव भूगोल के द्वैतवाद को भी है।

वैसे भौतिक एवं मानव भूगोल में अन्तर सम्भवतः ग्रीक भौगोलिक काल में ही होने लगा था। जैसे हिकोटियस ने भौतिक तत्वों के अध्ययन पर बल दिया तो हेरोडोटस एवं स्ट्रैबो ने मानव भूगोल पर। बाद में ~~बर्नहार्ड~~ बर्नहार्ड वारेनियस ने 17वीं शदी में Geographia Generalis ग्रन्थ में भौतिक एवं मानव भूगोल की अध्ययन-विधियों में अन्तर के आधार पर दोनों के बीच विभाजक रेखा खींच दी।

इन दोनों के बीच अन्तर को जर्मनों ने और भी स्पष्ट किया। काण्ट के अनुसार "विश्व के ज्ञान का अध्ययन Natural geog. है। जबकि मानव का अध्ययन Anthropology है। 18वीं शदी में ही J. Forster ने भूगोल के विषय-क्षेत्र को 6 भागों में बाँटा - पृथ्वी और भूमि महासागर, जलवायु मण्डल, पृथ्वी के परिवर्तन जीवधारी एवं मानव। इनमें भौतिक तत्वों के साथ जीवधारियों एवं मानव को भी सम्मिलित किया गया है।

भौतिक भूगोल के समर्थक हम्बोल्ट ने उच्चावच, मिट्टी, जलवायु, वनस्पति आदि भौतिक तत्वों को ही भूगोल का वास्तविक आधार माना। पर मानवीय अध्ययन पर भी बल दिया। काण्ट एवं हम्बोल्ट के अनुसार प्रकृति की एकता (Terrestrial unity) के

लिए भूगोल में भौतिक तत्वों के साथ मानव को भी सम्मिलित करना चाहिए। हेम्बोल्ट ने मानव सभ्यता को प्रकृति का अंग माना। उनके अनुसार मानव पर प्रकृति का निरंकुश प्रभाव है। नियतिवादी होते हुए उन्होंने स्वीकारा कि मानव के अध्ययन के बिना प्रकृति का अध्ययन अधूरा है। प्रकृति मानव को प्रभावित तो करती है, पर " By his wonderful capacity of adopting himself to all physical elements, man everywhere becomes most essentially associates with terrestrial life " — Humbodt

भूगोल के भौतिक तत्वों के पक्षधर होने के कारण उन्होंने कहा कि मानव द्वारा प्राकृतिक घटनाएँ कम प्रभावित होती है। फिर भी उन्होंने मानव भूगोल एवं भौतिक भूगोल में द्वैधता को नहीं स्वीकारा। पर उनके समकालीन रिटर ने Erdkunde ग्रन्थ में दोनों को पृथक अस्तित्व दिया। पर उनका मत यह नहीं था कि दोनों का पृथक अध्ययन हो। प्राकृतिक एवं मानवीय तत्वों में अन्तर्सम्बन्ध है। अतः भौतिक एवं मानव भूगोल अविभाज्य है।

पर 19-20 वीं शदियों में अधिकांश भूगोलवेत्ताओं ने अपने को भौतिक भूगोल तक केन्द्रित रखा। थामस हक्सले ए. पेंक, W.M. Davis, कोपेन, मेकिण्डर, हर्बर्टसन आदि भौतिक भूगोल के समर्थक थे। ब्रिटेन, अमेरिका, रूस एवं कुछ यूरोपीय देशों में अधिकांशतः अवैविक भौतिक भूगोल पर बल दिया जाया। भूगर्भशास्त्री शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण का यह परिणाम था। Wrigley (1965) के अनुसार

Scanned with CamScanner

भौतिक भूगोल नियमबद्ध है। पर मानव भूगोल में कारक और प्रभाव को नियमबद्ध नहीं किया जा सकता, क्योंकि मनुष्य विवेकशील है। आवश्यक नहीं कि समान प्राकृतिक वातावरण में मनुष्य के क्रिया-कलाप समान ही हों।

"In physical geography law statements of importance but in Human geography such statements are irrelevant."

अतः मानव भूगोल को भौतिक भूगोल से पृथक शाखा के रूप में विकसित किया गया। वैसे भौतिक भूगोल में मानवीय तत्वों की उपेक्षा की प्रतिक्रिया में मानव भूगोल का विकास हुआ। रेटजेल, ब्लॉश, हन्टिंगटन, सावर, मेकिण्डर, सेम्पुल आदि ने मानवीय क्रिया-कलापों को भौगोलिक अध्ययन में महत्व दिया। उनके अनुसार मनुष्य विवेकी, सक्षम, अभियोजन-कुशल परिवर्तनकारी शक्ति है। पर उनमें अधिकांशत ने यह भी माना कि मानव भौतिक तत्वों से नियंत्रित और प्रभावित भी होता है, क्योंकि

"Man is the product of the earth's surface".
— Miss E.C. Semple

वस्तुतः भौतिक और मानवीय तत्वों में सूक्ष्म जटिल बहुउद्देशीय अन्तसम्बन्ध है। "भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों के बीच स्पष्ट सीमा-रेखा खींचना अतार्किक है।" हार्टशोर्न अतः भौतिक-एवं मानव भूगोल अविभाज्य हैं। दोनों में द्वैधता अतार्किक है। यह द्वैधता भूगोल को एकांगी बना देगी।